❍ 10 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗सर्विस पर ततपर रहे ?∗

➢➢ ∗सच्ची गीता सुनी और सुनायी ?∗

➢➢ ∗सदा ख़ुशी की खुराक खायी और खिलाई ?∗

➢➢ ∗सर्व की दुआओं से स्वयं को भरपूर किया ?∗

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ ∗बीजरूप स्थिति या शक्तिशाली याद की स्थिति यदि कम रहती है तो इसका कारण अभी तक लीकेज है, बुद्धि की शक्ति व्यर्थ के तरफ बंट जाती है।∗ कभी व्यर्थ संकल्प चलेंगे, कभी साधारण संकल्प चलेंगे। जो काम कर रहे हैं उसी के संकल्प में बुद्धि का बिजी रहना इसको कहते हैं साधारण संकल्प। याद की शक्ति या मनन शक्ति जो होनी चाहिए वह नहीं होती इसलिए पावरफुल याद का अनुभव नहीं होता ∗इसलिए सदा समर्थ संकल्पों में, समर्थ स्थिति में रहो तब शक्तिशाली बीजरूप स्थिति का अनुभव कर सकेंगे।∗

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं कल्प-कल्प की पूज्य आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को कल्प-कल्प की पूज्य आत्मायें अनुभव करते हो? स्मृति है कि हम ही पूज्य थे, हम ही हैं और हम ही बनेंगे? पूज्य बनने का विशेष साधन क्या है? कौन पूज्य बनते हैं? *जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं और श्रेष्ठ कर्मों का भी फाउन्डेशन है पवित्रता। पवित्रता पूज्य बनाती है। अभी भी देखो जो नाम से भी पवित्र बनते हैं तो पूज्य बन जाते हैं। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया इसमें ही सिर्फ श्रेष्ठ नहीं बनना है।* यह भी श्रेष्ठ है लेकिन साथ में और भी पवित्रता चाहिये।

〰✧ *अगर मन्सा संकल्प में भी कोई निगेटिव संकल्प है तो उसे भी पवित्र नहीं कहेंगे, इसलिए किसी के प्रति भी निगेटिव संकल्प नहीं हो। अगर बोल में भी कोई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जो यथार्थ नहीं है तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे। यदि संकल्प और बोल ठीक हों लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में फर्क हो, किससे बहुत अच्छा सम्बन्ध हो और किससे अच्छा नहीं हो तो उसे भी पवित्रता नहीं कहेंगे।* तो ऐसे मन्सा-वाचा-कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र हो? ऐसे पूज्य बने हो? अगर मानो कोई भी बात में कमी है तो उसको खण्डित कहा जाता है। खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती है।

〰✧ इसलिए जरा भी मन्सा, वाचा, कर्मणा में खण्डित नहीं हो अर्थात् अपवित्रता न हो, तब कहा जायेगा पूज्य आत्मा। तो ऐसे पूज्य बने हो? जड़ मूर्ति भी खण्डित हो जाती है तो पूजा नहीं होती। उसको पत्थर मानेंगे, मूर्ति नहीं मानेंगे। म्यूजियम में रखेंगे, मन्दिर में नहीं रखेंगे। *तो ऐसे पवित्रता का फाउन्डेशन चेक करो-कोई भी संकल्प आये, तो स्मृति में लाओ कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ। यह याद रहता है या जिस समय कोई बात आती है उस समय भूल जाता है, पीछे याद आता है?* फिर पश्चाताप होता है-ऐसे नहीं करते तो बहुत अच्छा होता। तो सदा पवित्र आत्मा हूँ, पावन आत्मा हूँ। पवित्रता अर्थात् स्वच्छता।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ साइलेन्स की शक्ति के साधनों द्वारा नजर से निहाल कर देंगे। *शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे।* शुभ भावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना उत्पन्न करा लेंगे।

〰✧ ऐसे उन आत्माओं को शान्ति की शक्ति से सन्तुष्ट करेंगे, तब आप चैतन्य शान्ति देव आत्माओं के आगे *'शान्ति देवा, शान्ति देवा' कह करके महिमा करेंगे और यही अंतिम संस्कार ले जाने के कारण द्वापर में भक्त आत्मा बन आपके जड़ चित्रों की यह महिमा करेंगे।*

〰✧ यह ट्रैफिक कन्ट्रोल का भी महत्व कितना बडा है और कितना आवश्यक है - यह फिर सुनायेंगे। लेकिन *शान्ति की शक्ति के महत्व को स्वयं जानो और सेवा में लगाओ।* समझा।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *जैसे आवाज में आना अति सहज लगता है ऐसे ही आवाज से परे हो जाना इतना सहज है? यह बुद्धि की एक्सरसाइज सदैव करते रहना चाहिए।* जैसे शरीर की एक्सरसाइज शरीर को तन्दरुस्त बनाती है ऐसे आत्मा की एक्सरसाइज आत्मा को शक्तिशाली बनाती है।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

_____

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कलियुगी दुनिया के दुःख के छप्पर को उठाना, याद से पुण्य कमाना"*

➳ _ ➳ एक खुबसूरत खिले गुलाबो से भरपूर, उपवन को निहारती हुई मै आत्मा मुस्कराती हूँ... और गुलाबो के साथ अनगिनत काँटों को देख... अपने जीवन के दुःख भरे काँटों के बारे में सोच रही हूँ कि... *मीठे बागबान पिता ने मेरे जीवन में आकर... कैसे सारे दुःख भरे काँटों को निकाल, सुख की लताओं से दामन सजा दिया है..*. आज जीवन कितना प्यारा, खुबसूरत गुलाब बनकर... गुणो की रूहानियत को महका रहा है... और यही खुबसूरत जीवन सबको देकर मै आत्मा... अथाह पुण्यो से अपनी झोली भरकर... महान भाग्यशाली बन रही हूँ... दिल की यह बात मीठे बाबा को सुनाने मै आत्मा... मधुबन के तपस्या धाम में बाबा के पास उड़ चलती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी यादो में डुबोकर, असीम सुखो का मालिक बनाते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वरीय प्यार और साथ को पाकर, अपने सत्य स्वरूप के नशे में डूबकर, सदा पुण्यो के खाते को बढ़ाते चलो... जिन सच्ची खुशियो से आप बच्चे खुशनुमा हो गुणवान फूल बनकर सतयुगी धरा पर महकने को तैयार हो रहे हो... *इन सच्ची खुशियो की तरंगो से विश्व धरा को तरंगित कर दो... चहुँ ओर सुख ही सुख बिखरा दो..*."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के असीम प्यार को मन बुद्धि रुपी झोली में भरकर मुस्कराते हुए कहती हूँ :- *"मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा *कितनी खुशनसीब हूँ कि... जो ईश्वर पिता से अखूट खजाने पाकर, पुण्यो से अपना दामन सजा रही हूँ.*.. मीठे बाबा इस कलयुगी दुनिया में आप आकर मुझे

आवाज न दी होती, मै आत्मा इस सौंदर्य से कभी न सजती... और आज यह सच्चे आनन्द की बहार, पूरे विश्व में फैलाकर... मीठे सुखो से सजा सतयुग ला रही हूँ..."

❊ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी शक्तियाँ देकर अनन्त शक्तियो से भरपूर करते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे...ईश्वरीय यादो में गहरे डूबकर इस दुखो भरी दुनिया को सच्चे सुखो का सुखधाम बनाओ... *दिव्यता और पवित्रता को धारण कर... दुखो की धरा को सुख भरे फूलो में तब्दील करो.*.. सबके जीवन में खुशियो की मुस्कान सजाकर... पुण्यो को जमा करने वाले... विश्वकल्याण कारी बनकर मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की अमूल्य शिक्षाओ को अपने दिल में समा कर कहती हूँ:-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी प्यार भरी बाँहों में समाकर... कितनी प्यारी और दिव्यता की मूरत बन गयी हूँ.*..और आपकी यादो में डूबकर, कलयुगी दुनिया में दुःख के छप्पर को उठाकर... सुख शांति प्रेम की दुनिया बसाने में आपकी मददगार हो रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने मीठे प्यार में सराबोर करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... आप अपनी रूहानियत और दिव्यता की दिव्य तरंगो से... इस विश्व धरा से दुखो का सफाया करने वाले... विश्व कल्याण कारी बन कर ईश्वरीय दिल में मुस्कराओ... *सबके दामन में आनन्द प्रेम और खुशियो के फूल सजाने वाले मा बागबान बन जाओ... इस धरती से दुःख को मिटाकर, सुख की अविरल धारा बहा दो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को बड़े ही प्यार से निहारकर असीम ख़ुशी में झूमते हुए कहती हूँ:-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *सबके जीवन को आप समान सच्ची खुशियो से भर रही हूँ... दुखो को दूर करने वाली मा सुखदाता बन रही हूँ.*.. और सच्चे सुखो की जागीर आपसे सबको दिलवाकर अनन्त पुण्यो को अपने आँचल में भर रही हूँ..."मीठे बाबा से असीम शक्तियो

को दिल में समाये मै आत्मा... साकारी वतन में लौट आयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप बिन्दी है, इस बात को यथार्थ समझकर बाप को याद करना है*"

➳ _ ➳ अपने परम पिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु शिव बाबा को याद करते हुए मैं सड़क के किनारे पैदल चलती जा रही हूँ। रास्ते मे एक मन्दिर के सामने से गुजरते हुए मैं मन्दिर के अंदर का नज़ारा देख कर कुछ पल के लिए वही रुक जाती हूँ। *मैं देख रही हूँ मन्दिर में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में मन्दिर में एकत्रित भक्तो की भीड़ को। शिवलिंग पर जल चढ़ाने वाले भक्तों की बहुत लंबी लाइन लगी है*। अपने हाथों में जल, बेल पत्र, अक, धतूरा लिए लोग शिवलिंग की पूजा कर रहें हैं। उन्हें देख मन ही मन उन पर तरस आता है और मैं सोचती हूँ *कितने नादान है बेचारे ये लोग, जो भगवान को यथार्थ ना जानने के कारण व्यर्थ के कर्मकांडो में फंस कर अपने समय को बर्बाद कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ परमात्मा को यथार्थ जानकर, उन्हें यथार्थ रीति याद करने में जो प्राप्ति है वो प्राप्ति भक्ति के इन कर्मकांडो से इन्हें कहां मिल सकती है! *उनके इस कृत्य को देख, मन ही मन उन पर रहम करते मैं अब स्वयं के बारे में विचार करती हूँ कि कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे भगवान ने स्वयं आ कर अपना परिचय दे कर इन व्यर्थ के कर्मकांडो से बचा लिया*। बाप बिंदी है, इस बात को यथार्थ समझ कर बाबा को याद करके मैं सेकण्ड में पदमो की कमाई जमा कर लेती हूँ। अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य पर नाज करते, मन ही मन अपने परम पिता परमात्मा का दिल से शुक्रिया अदा करते, अपने बाबा

की छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करते मैं अपने कर्म क्षेत्र पर पहुंच जाती हूँ।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता परमात्मा से अखुट प्राप्तियां करने के लिए अब मैं सभी बातों से किनारा कर, अपने मन बुद्धि को एकाग्र करके बैठ जाती हूँ। *अपने मस्तक पर तीन बिंदियो की स्मृति का तिलक लगाती हूँ, और स्मृति स्वरूप बन बाबा की यथार्थ याद में बैठ जाती हूँ। इस यथार्थ याद में स्थित होते ही मुझे सेकेंड में एक मधुर से न्यारेपन का एहसास होने लगता है*। एक ऐसा न्यारापन जो मुझे हर बंधन से मुक्त कर, एक दम हल्केपन का अनुभव करवा रहा है। अपने चमकते हुए दिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप को मैं मनबुद्धि रूपी नेत्रों से देख रही हूँ। *मेरा यह स्वरूप मुझे मेरे वास्तविक गुणों और शक्तियों की अनुभूति करवा रहा है*।

➳ _ ➳ अपने गुणों और शक्तियों के अनुभव का आनन्द लेते - लेते, अपने शिव पिता की मीठी याद की डोर को थामे मैं एक आनन्दमयी रूहानी यात्रा पर बढ़ती चली जा रही हूँ। *साकार लोक से परमधाम तक की इस रूहानी यात्रा का आनन्द लेते - लेते मैं अब पहुंच गई हूँ अपनी मंजिल अपने स्वीट साइलेन्स होम परमधाम में अपने शिव पिता के सामने*। सर्व गुणों, सर्वशक्तियों के दाता मेरे शिव पिता परमात्मा मेरे बिल्कुल नजदीक हैं। उनको देखते ही मेरा रोम - रोम जैसे खिल उठा है । मेरी ख़ुशी का कोई पारावार नही है । *मन में एक ही गीत बज रहा है" पाना था सो पा लिया"*

➳ _ ➳ बाबा के प्रति मेरे असीम प्रेम के उदगार संकल्पो के माध्यम से स्वत: ही प्रकट हो रहें हैं। मेरे प्राणों से प्यारे बाबा, जन्म -जन्म से मैं आपको याद कर रही थी । आखिर मैं आपके पास पहुँच ही गई । आपसे मिल कर मेरे जन्म - जन्म के कष्ट मिट गये । *सर्व दुखों से परे आपके पावन प्रेम की शीतल छाया को पाकर मैं धन्य - धन्य हो गई हूँ । आपको पाकर मैंने सब कुछ पा लिया मेरे बाबा*।

➳ _ ➳ मेरे एक - एक संकल्प को मेरे दिलाराम बाबा पढ़ रहे हैं और प्रेम का रिटर्न अपनी शक्तिशाली किरणों के रूप में मुझ पर प्रवाहित कर रहें हैं। इन पावरफुल वायब्रेशन्स को पाकर मैं आत्मा आनन्द विभोर हो रही हूँ। *मेरे प्राण प्रिय बाबा की सर्वशक्तियाँ मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की कट को धो कर मुझे सम्पूर्ण पावन, सतोप्रधान बना रही है*। अपने प्यारे परमपिता परमात्मा की सर्व शक्तियों से भरपूर हो कर अब मैं धीरे - धीरे परमधाम से नीचे आ रही हूँ और प्रवेश कर रही हूँ अपनी साकारी देह में ।

➳ _ ➳ *परमात्म प्रेम को मन मे बसाये, अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर, यथार्थ परमात्म याद के द्वारा सर्व प्राप्तियों का अनुभव करते, अब मैं सदैव अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं को भी परमात्मा बाप का यथार्थ परिचय दे कर, उन्हें भी परमात्म प्राप्ति का सत्य मार्ग दिखाती रहती हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सदा खुशी की खुराक खाने वाली और खुशी बांटने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं खुशनसीब बेफिक्र आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा सर्व की दुआओं से स्वयं को भरपूर करती हूँ ।*
✺ *मैं सहज पुरुषार्थी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कोई भी बात नीचे ऊपर नहीं समझना। अच्छा है और अच्छा ही रहेगा। *बहुत अच्छा, बहुत अच्छा करते आप भी अच्छे बन जायेंगे और ड्रामा की हर सीन भी अच्छी बन जायेगी क्योंकि आपके अच्छे बनने के वायब्रेशन कैसी भी सीन हो नगेटिव को पाजिटिव में बदल देगी, इतनी शक्ति आप बच्चों में है सिर्फ यूज करो।* शक्तियां बहुत हैं, समय पर यूज करके देखो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करेंगे।

✺ *ड्रिल :- "शक्तियों को समय पर यूज कर अच्छे-अच्छे अनुभव करना"*

➳ _ ➳ चारों तरफ हरियाली ही हरियाली ठंडी ठंडी हवाएं... और भीनी-भीनी प्रकृति की खुशबू के बीच... मैं आत्मा एक ऊंचे स्थान पर बैठी हुई हूं... और अपने आप को परमात्मा से मन बुद्धि से जोड़ते हुए... अपने अंदर नई शक्तियां भर रही हूं... *मैं आत्मा अनुभव कर रही हूँ... कि सीधा परमधाम से और शिव परमात्मा से शक्तिशाली किरणें मुझ पर गिर रही है... और मुझ आत्मा में समाती जा रही है... जैसे-जैसे वो किरणें मुझमें समा रही है... मुझे अनुभव हो रहा है की मुझमें अदभुत शक्तियों का समावेश हो रहा है...* और मैं

इस स्थिति को गहराई से फील करते हुए... कुछ देर इस आनंदमय स्थिति में बैठ जाती हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने आप को मास्टर सर्वशक्तिमान अवस्था में अनुभव कर रही हूं... *मुझे प्रतीत हो रहा है कि अब मेरे अंदर सभी शक्तियां समा गई है... और मैं अब हर परिस्थिति का दृढ़ता के साथ और पूरे आनंद के साथ सामना कर सकती हूं...* और इसी स्थिति की स्मृति में मैं उस खुशनुमा मनमोहक वातावरण से नई राह पर चलने लगती हूं... चलते-चलते मुझे बहुत ही थकान का अनुभव हो रहा है... और मैं साथ ही यह भी महसूस कर रही हूं... कि अभी मुझे काफी लंबा सफर तय करना है... और इस लंबे सफर पर चलने के लिए मुझे सहनशक्ति का उपयोग करना होगा...

➳ _ ➳ और उसी समय मैं आत्मा अपनी मन बुद्धि से संकल्प लेती हूं... कि मैं सफलता मूर्त आत्मा हूं... और इस दृढ़ संकल्प से और पॉजिटिव संकल्प से मैं अंदर ही अंदर यह तय कर लेती हूं... कि मैं फरिश्ता इस मखमली रास्ते पर अपने फूल से कदम रख रही हूं... और मैं अनुभव करती हूं कि चलते-चलते मुझे बिल्कुल भी थकान का अनुभव नहीं हो रहा... और ना ही अपने इस देह का बोझ अनुभव कर पा रही हूं... तभी मैं पीछे मुड़कर देखती हूं... तो मैं आश्चर्यचकित हो जाती हूं... मैं देखती हूं कि मैंने कुछ ही समय में इतना लंबा सफर तय कर लिया है... जिसको करने में मुझे काफी समय लग सकता था... *मैंने अपने अंदर की इस छुपी हुई शक्ति द्वारा अपनी कठिन राह को बहुत ही कोमल बना दिया है... और मैं बहुत आनंदित होती हूं... और मन ही मन अपने परम पिता को धन्यवाद कहती हूं...*

➳ _ ➳ और अब मैं आत्मा अपने अंदर परमात्मा की शक्तियों रूपी आभा अनुभव करते हुए अपनी राह पर चलने लगती हूँ... और मैं अब चलते चलते एक ऐसे स्थान पर आ जाती हूं... जहां पर कुछ आत्माएं आपस में पुरानी दुख देने वाली बातों को चिंतन कर रही हैं... और अपनी स्थिति चिंतामय बना लेती है... उनको देखकर मैं आत्मा एक स्थान पर बैठ जाती हूं... और मनन करती

हूं... आज से मैं भी अपनी मजबूत अवस्था बनाऊंगी... इन आत्माओं की तरह चिंतित नहीं होऊँगी... *और मैं समाने की शक्ति को यूज करते हुए... पिछली दुख देने वाली व्यर्थ बातों को अपने अंदर समाते हुए... अपने मन बुद्धि के तार सिर्फ और सिर्फ अपने परमात्मा से जोड़ने का संकल्प लेती हूँ...*

➳ _ ➳ और जैसे ही मैं आत्मा अपने मन ही मन यह संकल्प लेती हूं... तो मैं अनुभव करती हूं... कि मेरा चित्त एकदम शांत हो गया है... जैसे मन रूपी समन्दर में लहरों के समान हजारों सवाल उमड़े थे... मानो उन सवालों की उठती हुई लहरें... एकदम समंदर में समा गई हो... और समंदर एकदम शांत हो गया हो... और ऐसे ही मैं अपने परमात्मा द्वारा दी हुई हर शक्तियों का सही समय पर उपयोग करते हुए पहुंच जाती हूं अपने बाबा के कमरे में और अपनी रूहानी दृष्टि से और संकल्पों के द्वारा मन-ही-मन बाबा को धन्यवाद कह रही हूँ... और *अब अपने पुरुषार्थ को परमात्मा द्वारा दी हुई शक्तियों और पॉजिटिव संकल्पों से और भी तीव्र कर देती हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔